शबद हजारे पातिसाही १०

ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

रामकली पातिसाही १०।।

रे मन ऐसो कर संनिआसा ।। बनसे सदन सबै कर समझहु मन ही माहि उदासा ।।१।। रहाउ ।। जत की जटा जोग को मंजनु नेम के नखन बढाओ ।। गिआन गुरू आतम उपदेसहु नाम बिभूत लगाओ ।।१।। अलप अहार सुलप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति ।। सील संतोख सदा निरबाहिबो ह्वैबो त्रिगुण अतीति ।।२।। काम क्रोध हंकार लोभ हठ मोह न मन सिउ ल्यावै ।। तब ही आतम तत को दरसे परम पुरख कह पावै।।३।।१।।

रामकली पातिसाही १०।।

रे मन इह बिधि जोगु कमाओ ।। सिंञी साच अकपट कंठला धिआन बिभूत चड़ाओ ।। १।। रहाउ ।। ताती गहु आतम बसि कर की भिछ्छा नाम अधारं ।। बाजे परम तार ततु हरि को उपजै राग रसारं ।।१।। उघटै तान तरंग रंगि अति गिआन गीत बंधानं ।। चकि चकि रहे देव दानव मुनि छकि छकि ब्योम बिवानं ।।२।। आतम उपदेस भेसु संजम को जाप सु अजपा जापै ।। सदा रहै कंचन सी काया काल न कबहूं ब्यापै ।।३।।२।।

रामकली पातिसाही १०।।

प्रानी परम पुरख पग लागो ।। सोवत कहा मोह निंद्रा मै कबहूं सुचित ह्वै जागो ।।१।। रहाउ ।। औरन कहा उपदेसत है पसु तोहि प्रबोध न लागो ।। सिंचत कहा परे बिखियन कह कबहु बिखै रस त्यागो ।।१।। केवल करम भरम से चीनहु धरम करम अनुरागो ।। संग्रह करो सदा सिमरन को परम पाप तजि भागो।।२।। जाते दूख पाप नहि भेटै काल जाल ते तागो ।। जौ सुख चाहो सदा सभन कौ तौ हरि के रस पागो ।।३।।३।।

रागु सोरठि पातिसाही १०।।

प्रभ जू तो कह लाज हमारी ।। नील कंठ नरहरि नाराइण नील बसन बनवारी ।।१ रहाउ ।। परम पुरख परमेसर सुआमी पावन पउन अहारी ।। माधव महा जोति मध मरदन मान मुकंद मुरारी ।।१।। निरबिकार निरजुर निंद्रा बिनु निरबिख नरक निवारी ।। क्रिपा सिंध काल त्रै दरसी कुक्रित प्रनासनकारी ।।२।। धनुरपानि ध्रितमान धराधर अन बिकार असिधारी ।। हौ मति मंद चरन सरनागति कर गहि लेहु उबारी ।।३।।४।।

रागु कलिआण पातिसाही १० ।।

बिन करतार न किरतम मानो ।। आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसर जानो ।।१।। रहाउ ।। कहा भयो जो आन जगत मै दसक असुर हरि घाए ।। अधिक प्रपंच दिखाइ सभन कह आपहि ब्रहम कहाए ।।१।। भंजन गड्हन समरथ सदा प्रभु सो किम जाति गिनायो ।। तांते सरब काल के असि को घाइ बचाइ न आयो ।।२।। कैसे तोहि तारिहै सुनि जड़ आप डुबियो भव सागर ।। छुटिहो काल फास ते तबही गहो सरनि जगतागर ।।३।।५।।

खिआल पतिसाही १० ।।

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा ।। तुध बिनु रोगु रजाईआं दा ओढण नाग निवासां दे रहणा ।। सूल सुराही खंजरु पियाला बिंगु कसाईयां दा सहणा ।। यारड़े दा सानूं सथ्थरु चंगा भठ्ठ खेड़िआं दा रहणा ।।१।।६।।

तिलंग काफी पातिसाही १० ।।

केवल कालई करतार । आदि अंत अनंत मूरति गड्हन भंजनहार ।।१।। रहाउ ।। निंद उसतत जउन के सम सत्र मित्र न कोइ ।। कउन बाट परी तिसै पथ सारथी रथ होइ ।।१।। तात मात न जात जाकर पुत्र पौत्र मुकंद ।। कउन काज कहाहिंगे आन देवकिनंद ।।२।। देव दैत दिसा विसा जिह कीन सरब पसार ।। कउन उपमा तौन को मुख लेत नामु मुरार ।।३।।७।।

राग बिलावल पातिसाही १० ।।

सो किम मानस रूप कहाए ।। सिध समाध साध कर हारे क्योहूं न देखन पाए ।।१।। रहाउ।। नारद बिआस परासर ध्रूअ से धिआवत धिआन लगाए ।। बेद पुरान हार हठ छाडिओ तदपि धिआन न आए ।।१।। दानव देव पिसाच प्रेत ते नेतह नेत कहाए ।। सूछम ते सूछम कर चीने बिधन ब्रिध बताए ।।२।। भूम अकास पताल सभै सजि एक अनेक सदाए ।। सो नर काल फास ते बाचे जो हरि सरणि सिधाए ।।३।।१।।८।।३२।।

राग देवगंधारी पातिसाही १० ।।

इक बिन दूसर सो न चिनार ।। भंजन गड़न समरथ सदा प्रभ जानत है करतार ।। रहाउ ।। कहा भइओ जो अत हित चित कर बहु बिध सिला पुजाई ।। प्रान थकिओ पाहिन कह परसत कछु कर सिध न आई ।।१।। अछत धूप दीप अरपत है पाहन कछू न खैहै ।। ता मैं कहां सिध है रे जड़ तोहि कछू बर दैहै ।।२।। जौ जीय होत तौ देत कछू तुहि कर मन बच करम बिचार ।। केवल एक सरण सुआमी बिन यौ नहि कतहि उधार ।।३।।१।९।।३३।।

राग देवगंधारी पातिसाही १० ।।

बिन हरि नाम न बाचन पेहै ।। चौदहि लोक जाहि बस कीने ताते कहां पलैहै ।।१।। रहाउ ।। राम रहीम उबार न सकहै जाकर नाम रटैहै ।। ब्रहमा बिसन रुद्र सूरज ससि ते बसि काल सबैहै ।।१।। बेद पुरान कुरान सबै मत जाकह नेत कहै है ।। इंद्र फनिंद्र मुनिंद्र कलप बहु धिआवत धिआन न ऐहै ।।२।। जाकर रुप रंग नहि जनियत सो किम स्याम कहै है ।। छुटहो काल जाल ते तबही तांहि चरन लपटैहै ।।३।।१।।१०।।३४।।